नामसंकीर्तनयोग : खण्ड १

नामजपका महत्त्व एवं लाभ

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५३, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

जुलाई २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख २९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

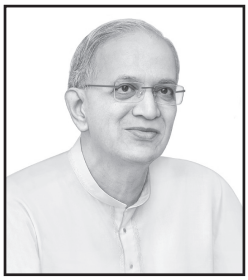

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधना मार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.७.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

७ भारतीय संस्कृतिके वैश्विक प्रसारार्थ 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्सकी संसदमें सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत आठवले

१८.५.१९९९

पू. संदीप गजानन आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. 'नामसंकीर्तनयोग'का अर्थ ८

२. 'नामसंकीर्तन'के समानार्थी शब्द (नामजप, नामस्मरण आदि) ८

३. 'जप' शब्दके अर्थ एवं प्रकार ८

४. नामजपके विषयमें भ्रान्तियां ९

५. नामकी विशेषताएं ९

* नामके विषयमें आए विकल्प नामके द्वारा ही दूर होना १०

* 'नामजप करना' अर्थात 'सर्वस्व देना' ११

* नामका रूप लघु; अपितु प्रभाव अत्यन्त व्यापक ११

६. नामजपका तत्त्व ११

७. नामजपका महत्त्व १२

८. नामजपके लाभ २१

९. नामजप एवं अन्य योगमार्गोंकी तुलना ४४

卐 नामजप, देवता आदि संबंधी कुछ आलोचनाएं व उनका खण्डन ६३

भूमिका

ईश्वरका केवल एक नाम सभी धर्मशास्त्रोंका आधार है । उसके नामकी महिमाका वर्णन करनेमें वेद भी असमर्थ हैं । यह नाम ही कलियुगका धर्म है और यही हमें भवसागरसे पार करेगा ।

हमारे गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजीने ऐसी ही भजनपंक्तियोंके माध्यमसे नामके महत्त्वका वर्णन किया है । सन्त तुकाराम महाराज, ब्रह्मचैतन्य गोंदवलेकर महाराज, सन्त कबीर जैसे सन्तोंने भी नामका महत्त्व बताया है । इसपर भी अनेक लोगोंके मनमें यह सन्देह रहता है कि छोटी-सी नामरूपी नौकासे अथाह भवसागर पार कर ईश्वरको कैसे प्राप्त किया जा सकता है । नामके बिना ईश्वरकी अनुभूति नहीं होती और जबतक बुद्धिको यह बात समझमें नहीं आती, तबतक नामजप करना सम्भव नहीं होता । इस कारण अनेक लोग नामजप किए बिना ही यह निष्कर्ष निकालते हैं कि 'नामजपमें कुछ नहीं रखा है ।' नामसे सम्बन्धित सर्व सन्देह को विराम देने तथा ईश्वरकी सर्वश्रेष्ठ विभूति नामकी अद्वितीयता सबके ध्यानमें आए, इस हेतु यह ग्रन्थलेखन किया गया है । इस ग्रन्थमें दिए हुए सर्व सूत्र, उदा. नाम अर्थात वेदोंका भी उत्पत्तिस्रोत, नाम सदाचारी एवं पापी सबका तारक, किसी भी साधनाकी पूर्णताके लिए नाम आवश्यक, जीवनमुक्त व्यक्तिके लिए भी नाम आवश्यक, यह पढकर निश्चित ही नामके विषयमें श्रद्धा बढनेमें सहायता होगी ।

इस ग्रन्थमें नामजपसे शारीरिक और मानसिक रोग ठीक होना, मनकी एकाग्रता बढना, दुःखोंका निवारण होना, सर्व पापोंका नाश होना, मृत्युके पश्चात भी लाभदायक होना इत्यादि विविध स्तरोंपर होनेवाले लाभोंका विवेचन किया गया है । ईश्वरप्राप्ति करने हेतु कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग, ज्ञानयोग इत्यादि साधनामार्ग हैं । इस ग्रन्थको पढनेपर ध्यानमें आएगा कि दैनिक जीवनकी भाग-दौडमें व्यस्त सर्वसामान्य सांसारिक लोगोंको आचरणमें सरल, शुचिता, स्थल-काल आदि बन्धनोंसे रहित एवं ईश्वरसे निरन्तर आन्तरिक सान्निध्य साध्य करवानेवाला, अर्थात साधनाको अखण्ड जारी रखनेवाला, एकमात्र साधनामार्ग नामयोग ही कैसे है । इससे ध्यानमें आएगा

卐 卐

कि 'नामका रूप लघु; अपितु प्रभाव अत्यन्त व्यापक' ऐसी 'नामसाधना' करना प्रत्येकके लिए कितना आवश्यक है । इस ग्रन्थमें वर्णित नामका महत्त्व पढकर नामसाधना आरम्भ करनेकी प्रेरणा पाठकोंको मिले, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना । – **संकलनकर्ता**

'धर्मका मूलभूत विवेचन' नामक ग्रन्थमें 'अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाके सर्व खण्डोंकी संयुक्त भूमिका दी है ।

卐 卐

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षिकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है । इससे पहले उन्हें ग्रन्थोंमें 'प.पू.' एवं 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है । इसके अनुसार ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें वैसा उल्लेख किया है ।

सनातनकी दो सद्गुरुओंके नामोंसे पहले विशिष्ट आध्यात्मिक उपाधि लगानेका कारण

नाडीपट्टिका-वाचनद्वारा सप्तर्षिने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको 'श्रीसत्शक्ति (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजीको 'श्रीचित्शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजी' सम्बोधित किया जा रहा है । ये सन्तद्वयी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी हैं ।

टिप्पणी : ग्रन्थमें अनेक स्थानोंपर 'परात्पर गुरु डॉक्टर' अथवा 'परात्पर गुरु डॉ. आठवले', ऐसा उल्लेख ग्रन्थके संकलनकर्ताओंमेंसे 'परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी'के सन्दर्भमें है ।